।। अर्हम् ।।

आचार्य श्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति, श्रीडूँगरगढ़

दूरभाश नं. 01565-224900, 224600

ई-मेल :- **jstsdgh01565@gmail.com**

वर्धमान महोत्सव के ;ुभारंभ पर आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा

संगठनों के बिखराव का कारण है आग्रह

-तुलसीराम चौरड़िया-

श्रीडूँगरगढ़ 16 जनवरी : दे-ा की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टियों, सामाजिक संगठनों और धर्मसंघों में बढ़ते बिखराव का कारण आग्रहवृति को बताते हुए महान दा-र्निक अणुव्रत अनु-ाास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि ''मैं चाहता हूं वैसा हो जाये तो राम राजी है'' इस आग्रहपूर्ण मनोवृति के कारण दे-ा के प्रतिश्ठित संगठनों में दरार पैदा हो रही है और पारस्परिक संबधों मे ंकटुता बढ़ रही है। जो मैं सोचता हूं वही सही है इस चिंतन को बदलने पर ही संगठन को दीर्घजीवी बनाया जा सकता है।

आचार्य महाप्रज्ञ कस्बे के तेरापंथ भवन स्थित प्रज्ञा समवसरण में वर्धमान महोत्सव के ;ुभारंभ अवसर पर जन समुदाय को संबोधित कर रहे थे। उन्होनें कहा कि संगठन का आधार है मर्यादा और मर्यादा का आधार है विनय। जहां पर विनय का महोत्सव नहीं मनाया जाता उसे मर्यादा का महोत्सव बनाने का भी अधिकार नहीं है। वर्धमान महोत्सव विनय का महोत्सव है। आचार्य भिक्षु ने मर्यादा का निर्माण किया पर उन पर लिखा संवल्प और विनय पर स्वतंत्र गंथ लिखे। जयाचार्य ने भी विनय के विभिन्न पहलुओं पर अपनी लेखनी चलाई। उस पर अगर गहराई से अन्वेशण किया जा सके तो समाज को नया मोड़ दिया जा रहा सकता है। आचार्य तुलसी ने भी विनय पर बहुत बल दिया है। उन्होनें जैनागम दसवें आलियां सूत्र में आर आचार, तप, श्रुत और विनय की चर्चा करते हुए कहा कि अनु-ाासन को सुनना, सम्यक् ग्रहण करना, निर्दे-ा की आराधना करना और अनाग्रह मनोवृति का विकास करना ये चार सूत्र विनय समाधि के हैं। जो इन सूत्रों को आत्मसात कर लेता है वह संगठन हजारों वर्शों तक मर्यादा महोत्सव मनाने का अधिकार पा लेता है। उन्होनें कहा कि आचार्य तुलसी जैसी विनम्रता व ग्रहण-ीलता मैंने अन्यत्र कहीं नहीं देखी।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि वर्धमान महोत्सव के माध्यम से जीवन को वर्धमान बनाने की प्रेरणा ले। तेरापंथ का गौरव-ाली इतिहास है। इसकी वर्तमान वि-ोशताओं को संपोशित करने का प्रयत्न करें।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा ने कहा कि अहीयमान, अवस्थित और वर्धमान यह तीन स्थितियां है । जो हीयमान होता है वह मूल स्थिति को सुरक्षित नहीं रख पाता है और तल में चला जाता है। जो अवस्थित होता है वह संगठन अपनी मूल स्थिति पर ही कायम रहता है। जो वर्धमान होता है वह निरंतर विकास करता रहता है। तेरापंथ धर्मसंघ वर्धमान है, गति-ील है और प्रगति के नये मापदण्डों पर निंतर आरोहण कर रहा है। अगर कोई पूछे की तेरापंथ कैसा है तो यही कहा जा सकता है कि तेरापंथ जैसा है। उन्होनें भौतिक विकास के आंकड़ों को प्रस्तुत करते हुए कहा कि वर्तमान युग में भौतिक विकास बहुत हुआ है पर आध्यात्मिक विकास की रफ्तार धीमी होने के कारण अनेक समस्याओं का जन्म हो रहा है।

अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल ने तेरापंथ के वर्तमान पक्ष पर अपने विचार प्रस्तुत किये एवं स्वचलित गीत का संगान किया। :ाासन गौरव साध्वी राजीमति ने खून पसीना एक कर संघ की सेवा करने का आह्वान करते हुए अनु-ाासन है तार व्यक्तित्व की तर्ज पर तेरापंथ के विलक्षण अतीत पर प्रका-ा डाला। साध्वी सोमलता ने संघर्श की कहानी अपनी जुबानी पर तेरापंथ के संघर्श-ील अतीत को रेखाकिंत किया। साध्वी आरोग्य श्री ने तेरापंथ के विकास का आधार :ाुद्ध आचार और :ाुद्ध व्यवहार को बताया। साध्वी सुव्रता ने अपने विचार रखे। साध्वी समुदाय ने सामूहिक गीत ''वर्धमान महोत्सव पर नव संकल्प सजाएं'' की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का मंगलाचरण स्थानीय तेरापंथ महिला मण्डल ने ''वर्धमान हो संघ हमारा'' गीत से किया। संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

महासभा का अलंकरण सम्मान समारोह 19 को

आचार्य महाप्रज्ञ के द्वारा विगत वर्श में प्रदत्त वि-ोश संबोधन प्राप्त श्रावक-श्राविकाओं का जैन :वेताम्बर तेरापंथी महासभा के द्वारा 19 जनवरी को :यामा प्रसाद मुखर्जी स्टेडियम में सम्मान किया जायेगा। आचार्य महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति के मीडिया संयोजक तुलसीराम चौरड़िया ने बताया कि धर्मसंघ को वि-ोश सेवाएं देने वालों एवं वि-ोश श्रद्धा भक्ति रखने वालों को आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा संबोधन प्रदान किये जाते है। :ाासन सेवी, श्रद्धानिश्ठ, कल्याण मित्र, श्रद्धा की प्रतिमूर्ति आदि संबोधन प्राप्त संपूर्ण भारत के श्रावक-श्राविकाओं को महासभा के द्वारा प्रति वर्श प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया जाता है। 19 जनवरी को आयोजित सम्मान समारोह में महासभा के राश्ट्रीय अध्यक्ष जसकरण चौपड़ा सबको सम्मानित करेंगे।